ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–05
दिनांक– मंगलवार, 16 जनवरी, 2024

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 18.1 एवं 9.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 95 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 70 प्रतिशत, हवा की औसत गति 6.5 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 0.8 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.6 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 13.6 एवं दोपहर में 19.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में मध्यम से घने कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(17–21 जनवरी, 2024)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 17–21 जनवरी, 2024 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है। सुबह में मध्यम से घने कुहासा छा सकता है।
- अधिकतम तापमान 15 से 18 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 9 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। 20 जनवरी से दिन के तापमान में वृद्धि हो सकती है।
- औसतन 3 से 4 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में सर्द वाली पछिया हवा चलने से ठंढ़ व कनकनी बरकरार रहने का अनुमान है। जिसके चलते कोल्ड–डे की स्थिति अभी भी एक–दो दिनों तक बरकरार रहने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में करीब 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- वर्त्तमान मौसम आलू की फसल में पिछेती झुलसा रोग के फैलाव के लिए अनुकूल है। कृषक भाई फसल की नियमित रुप से निगरानी करें। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व षिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इसके बचाव हेतु 2.0 से 2.5 ग्राम इण्डोफिल एम0 45 फफूँदी नाषक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। इस छिड़काव के 8–10 दिनों बाद पुनः रीडोमिल दवा का 1. 5 से 2.0 ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। कटवर्म या कजरा पिल्लू कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 से 3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- पिछात गेहूँ में दीमक कीट का प्रकोप दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर शाम के समय खेत में छिड़काव कर सिंचाई करें। समय से बोयी गई गेहूँ की 40 से 50 दिनों की फसल में दूसरी सिंचाई करें। अगात बोई गई गेहूँ की फसल जो 60 से 65 दिनों की हो गई है, उसमें तीसरी सिंचाई करें।
- मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का 3 ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। मटर में नियमित रुप से फली छेदक कीट की निगरानी करें।
- विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में 2 प्रतिषत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें। अरहर में फली छेदक कीट की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगराणी करे। इस कीट के मैगट सर्वप्रथम अरहर के पौधे के तने में छेद करके उसे खाते है। जिससें पौधे के तने एवं शाखाये सुखने लगती है। बाद में दाना आने पर बीजों को खाते है। जिस स्थानों पर मैगट खातें है, वहॉ कवक एवं जीवाणु उत्पन हो जाते है। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नही रह जाते है और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रुप से निगरानी करे। यह सुक्ष्म आकार का कीट पौधो के सभी मुलायम भागो–तने व फलीयों का रस चुसते है। ये कीट मधु–स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह–जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते है। फलीयॉ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- मिर्च की फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी करे। इसके शिशु/वयस्क कीट सैकड़ो की संख्या में पौधो की पत्तियो की निचली सतह पर छिपे रहते हैं और कभी–कभी उपरी सतह पर भी देखे जा सकते हैं। ये पत्तियो, कलियो व फूलो का रस चुसते है। यह कीट मिर्च में बांझी/ विषाणु रोग फैलाता है। इससे बचाव हेतु इमिडक्लोप्रीड 17.8 ई0सी0 का 1 मि0ली0 या डायमेथोएट 30 ई0सी0 का 2 मि0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- पशुपालक भाई दूधारु पशुओं के रख–रखाव एवं खान–पान पर विशेष ध्यान दें। हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से 50 ग्राम नमक, 50 से 100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। दुधारु पशुओं के दूध उत्पादन में आयी कमी को दूर करने के लिए नियमित रुप से कैल्सियम की सूई दिलायें अथवा तरल कैल्सियम खिलायें।

आज का अधिकतम तापमानः 12.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 10.2 डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः 9.1 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.1 डिग्री अधिक

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)